कृषि गोल्डलाइन
1 से 15 अगस्त, 2017
वर्षः 10, अंकः 01, पेजः 1

अधिक उत्पादन के लिए किसान हों जागरूक

सरसों की 3 नई उन्नत किस्में

डॉ. अशोक शर्मा, भरतपुर।

सरसों फसल पर हाल ही में तीन दिवसीय कृषि वैज्ञानिक संगोष्ठी दुर्गापुरा अनुसंधान केन्द्र में आयोजित हुई। इसमें सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अंतर्गत देश में कार्यरत विभिन्न केन्द्रों से विकसित सरसों की तीन किस्मों को कार्यशाला में देश की विभिन्न जलवायुवीय परिस्थितियों के लिए अनुशंसित किया गया।

सरसों की तीन नई अनुशंसित किस्में —

आर एच 0725 – उत्तरी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, एवं जम्मू में असिंचित क्षेत्रों के लिए।

सी.एस. 2800-1-2-3-5-1 – देश की लवणीय परिस्थितियों हेतु।

पी.डी.जेड.-1 – गुणवत्तापूर्ण किस्मों के लिए चिह्नित की गई हैं।

इस 24वीं कार्यशाला में वैज्ञानिकों ने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। बदलते परिवेश में अधिक उत्पादन के लिए किसानों को जागरूक व प्रोत्साहित करने की जरूरत है। आर्थिक सुदृढ़ता के लिए किसानों को राई-सरसों की खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। विभिन्न परिस्थितियों के लिए अलग-अलग तकनीकों का विकास करना चाहिए एवं भारत में फैले हुए कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से नवीन अनुसंधानों को किसानों तक पहुंचाया जा सकता है।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि नई किस्मों के प्रति किसानों में जागरूकता

की कमी एवं रबी में सिंचाई के साधनों का अभाव तिलहन उत्पादन कम होने का कारण हैं। उन्होंने बताया कि विभिन्न राज्यों में फैले हुए अनुसंधान केन्द्रों में तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा है। इस वर्ष उन्नत किस्मों का प्रजनक बीज अधिक उत्पादित किया गया। इसके परिणामस्वरूप उन्नत किस्मों का व्यापक प्रसार हो सकेगा एवं देश को खाद्य तेलों में आत्मनिर्भर बनाने में अग्रता मिल सकेगी। डॉ. राय ने संगोष्ठी में जानकारी दी कि गत वर्ष देश भर में 27 केन्द्रों द्वारा 14 राज्यों के 81 जिलों में 1945 प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया। बैठक में विभिन्न राज्यों के लिए वहां की जलवायु, भूमि, संसाधन आदि स्थितियों को ध्यान में रखते हुए राई-सरसों के उत्पादन को बढ़ाने की कार्ययोजना तैयार करने का निर्णय लिया गया।

विशेष बात — इस संगोष्ठी में प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकि हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन एवं किस्मों को चिह्नित किए जाने के साथ मुख्य बिंदुओं पर चर्चा हुई। इसमें राई-सरसों की बीमारियों, बीमारी की रोकथाम, राई में संकर किस्मों का उत्पादन, गुणवत्ता सुधार, परंपरागत तकनीकी सुधार आदि पर गहन विचार-विमर्श हुआ।

दैनिक भास्कर

एग्रो भास्कर

आईसीआरए के एडीजी ने किया दावा, कहा-हाईब्रिड का बीज भी दुबारा इस्तेमाल नहीं हो पाता

हाईब्रिड से अगली तकनीक वाले बीज हैं जीएम, इनसे ले सकते हैं ज्यादा उत्पादन

ललित शर्मा | जयपुर

जीएम (जेनेटिक मोडिफाइड) तकनीक वाले बीजों में कोई खराबी नहीं होती है। ये हाईब्रिड से अगली तकनीक वाले बीज हैं। इनसे अधिक उत्पादन लिया जा सकता है। इसे लेकर जो भी भ्रांति है, उनका निवारण होना चाहिए। यह कहना है भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीआरए) के सहायक महानिदेशक डॉ. एस.के. चतुर्वेदी का। यहां एक कार्यक्रम में शिरकत करने आए डॉ. चतुर्वेदी ने भास्कर से बातचीत में कहा कि यह नई तकनीक आई है, इसका इस्तेमाल करेंगे, तभी इसके फायदे-नुकसान का पता चलेगा। कपास जैसी फसलों में इसका उपयोग किया जा रहा है। इसी के चलते कपास में जोरदार उत्पादन लिया जा रहा है।

तिलहन के मामले में सरसों में भी जीएम बीजों के इस्तेमाल को उचित ठहराते हुए चतुर्वेदी ने कहा कि इससे देश में तिलहन का उत्पादन बढ़ेगा और देश में खाद्य तेलों के आयात का भार कम होगा। उन्होंने कहा कि जिस तरह से सरसों में हाईब्रिड बीज का इस्तेमाल करने के बाद आने वाली फसल के दानों को बीज के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जा सकता, ठीक इसी तरह से जीएम बीजों का इस्तेमाल एक बार करने के बाद दुबारा नहीं किया जा सकेगा। डॉ. चतुर्वेदी ने कहा देश में जीएम एच-11 नामक बीज आया है। किसानों को इसका इस्तेमाल करके देखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कपास में 98 प्रतिशत जीएम बीज का ही इस्तेमाल होता है। जो सोयाबीन, कॉर्नफ्लेक्स, टमाटर आदि बाहर से आयात किए जाते हैं, उनमें जीएम बीजों का ही इस्तेमाल होता है। उन्होंने कहा कि किसानों की आमदनी और प्रति हैक्टेयर उत्पादन बढ़ानी है तो जीएम को आने देना चाहिए।

डॉ. एस.के. चतुर्वेदी

तेल कम खाएं, स्वस्थ रहें

उन्होंने देश में खाद्य तेलों का कम उत्पादन होने से इसके आयात पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि देश के लोगों को अगर स्वस्थ रहना है तो तेल का उपयोग कम कर देना चाहिए। हर व्यक्ति देश में उत्पादित तेल का उपयोग नहीं कर पाता। सस्ते के चक्कर में जिस तेल का उपयोग करता है, वह आयातित हो सकता है। उसमें मिलावट होने से इनकार नहीं किया जा सकता। इन तेलों में पाम ऑयल की मिलावट की जाती है, जिससे स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। तेल का कम इस्तेमाल करने से लोगों के स्वास्थ्य पर भी गलत असर नहीं आएगा और आयात के लिए देश को विदेशी मुद्रा खर्च करने की नौबत नहीं आएगी।

राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला

खेती की लागत को कम करने की सलाह

भारतीय कृषि अनसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (दलहन एव तिलहन) डॉ. एस के. चतुर्वेदी ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिये खेती की लागत को कम करना वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए। तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए राई सरसों का विकास एवं क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों एवं किसानों का लक्ष्य होना चाहिए। डॉ. एस के. चतुर्वेदी ने सरसों अनुसंधान निदेशालय (भरतपुर) द्वारा राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा में पिछले दिनों आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए यह बात कही।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा कई किस्मों का विकास किया गया है लेकिन किसानों के खेतों पर उनकी उत्पादकता में काफी अनिश्चितता पाई जाती है। इसलिए विभिन्न परिस्थितियों में किस्मों की टिकाऊ उत्पादकता को बढ़ाने की आवश्यकता है। नई किस्मों के विकास के लिये समेकित पादप तकनीकियों का समावेशी उपयोग किया जाना चाहिए। उत्पादकता में मौसम एवं तकनीक के योगदान का विश्लेषण वैज्ञानिकों को करना चाहिए ताकि तकनीक के विकास एवं उनके हस्तान्तरण के लिये उपयुक्त रणनीति बनाई जा सकें। उन्होंने कहा कि विशेष गुणों की किस्मों के विकास का कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि तकनीक के विकास के साथ-साथ उनका किसानों तक पहुंचना भी जरूरी है, इसलिए वैज्ञानिकों को प्रथम पंक्ति प्रदर्शन का सही तरीके से आयोजन करना चाहिए। गुणवत्ता युक्त बीजों की उपलब्धता बढ़ाने के लिये हर संभव प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी तकनीक को विशेषकर जी एम तकनीक को जारी करने या अपनाने के लिये पर्याप्त एवं विश्वसनीय आंकडे जुटाये जाने चाहिए।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर जयपुर के कुलपति डॉ. पी. एस. राठौड़ ने कहा कि विश्व में राई-सरसों की उत्पादकता करीब 2 टन प्रति हैक्टेयर है, जबकि भारत में यह 1.83 टन प्रति हैक्टेयर है। इसलिए वैज्ञानिकों को विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल अधिक उत्पादन वाली किस्मों एवं तकनीकों का विकास करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि 1950 में मिट्टी में सिर्फ नत्रजन तत्व की कमी पाई जाती थी। जबकि आज करीब 10 पोषक तत्वों की कमी पाई जाती है। इसलिए संतुलित पोषक तत्वों के उपयोग की आवश्यकता है। राई-सरसों की उत्पादकता को मुख्य रूप से अनिश्चित वर्षा, पाला, उच्च तापमान, कीट एवं रोग का प्रकोप प्रभावित करते है। इनसे बचाव के लिये समुचित प्रबन्धन रणनीति बनाने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेषक डॉ. पी.के. राय ने तोरिया, राई एवं सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना कि 2016-17 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। डॉ. राय ने कहा कि नई किस्मों के प्रति किसानों में जागरूकता की कमी एवं रबी मे सिंचाई के साधनों का अभाव तिलहन उत्पादन कम होने का कारण है।

उन्होंने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। बदलते परिवेश में अधिक उत्पादन के लिये किसानों को जागरूक व प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

आर्थिक सुदृढता के लिये किसानों को राई-सरसों की खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है। विभिन्न परिस्थितियों के लिये अलग-अलग तकनीकों का विकास करना चाहिये एवं भारत मे फैले हुये कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से नवीन अनुसंधानों को किसानों तक पहुंचाया जा सकता है।

उन्होंने बताया कि विभिन्न राज्यों में फैले हुए अनुसंधान केन्द्रों द्वारा तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, भारतीय राई, करन राई एवं तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा हैं। इस वर्ष उन्नत किस्मों का प्रजनक बीज अधिक उत्पादन किया गया। इस अवसर पर डॉ. वी.के. यादव, निदेशक (अनुसंधान) श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर और डॉ. एस. जे. सिंह, निदेशक राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा जयपुर ने भी अनुसंधान उपलब्धियों की चर्चा करते हुए राई-सरसों के विकास के लिये सुझाव दिए।

कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुसा, नई दिल्ली एवं बनारस कृषि विश्वविद्यालय के राई-सरसों अनुसंधान केन्द्रों को उल्कृष्ट केन्द्र का अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। कार्यशाला में विभिन्न राज्यों से आए करीब 150 वैज्ञानिकों ने भाग लिया। इस अवसर पर 7 तकनीकी पुस्तकों का भी विमोचन किया गया। ◇◇◇

अखबार प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें :-
9414052453
1 वर्ष के लिए (24 अंक) 240/- मात्र

राई सरसों की कार्यशाला में तीन नई किस्मों का अनुमोदन

कार्यशाला **किसानों में नई किस्मों के प्रति जागरूकता में कमी पर चिंता जताई**

एजेंसी रिपोर्टर | जयपुर

राई-सरसों के लिए यहां आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान वैज्ञानिकों ने गहन चिंतन मनन के बाद तीन नई किस्मों को अनुमोदित किया है। राजस्थान की जलवायु के साथ अन्य राज्यों में भी सफलता पूर्व उगाई जा सकने वाली इन किस्मों से उत्पादन और उत्पादकता दोनों में बढ़ोतरी होगी। इस कार्यशाला के दौरान नई और उन्नत किस्मों के बारे में किसानों तक जानकारी नहीं पहुंच पाने को लेकर चिंता भी जताई गई। साथ वैज्ञानिकों से आह्वान किया गया कि खाद्य तेलों के उत्पादन में देश आत्मनिर्भर कैसे बने इसकी कार्ययोजना तैयार होनी चाहिए। इससे न सिर्फ आयात से मुक्ति मिलेगी बल्कि बाहर से आने वाले मिलावटी तेलों से भी छुटकारा मिलेगा, जिससे देश के लोगों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से संबद्ध भरतपुर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय और श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के दुर्गापुरा स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान ने संयुक्त रूप से किया है। इस कार्यशाला के दौरान विभिन्न केंद्रों पर विकसित सरसों बीज की तीन किस्मों का अनुमोदन किया गया। भिन्न परिस्थितियों के लिए विकसित इन किस्मों में आर.एस.-0725 राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और जम्मू के साथ दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है। इसी प्रकार लवणीय क्षेत्रों के लिए सीएस-2800-1-2-3-5-1 किस्म को अनुमोदित किया गया है। वहीं, गुणवत्ता किस्मों में पी.डी.जेड़.-1 किस्म को चिन्हित किया गया है। कार्यशाला के समापन पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन को बढ़ाया जा सकता है। किसानों तक अच्छी किस्म के बीजों की जानकारी और उपलब्धता दोनों की पहुंच जरूरी है। इसी क्रम में इस साल प्रजनक बीज अधिक उत्पादन किया गया है। उन्होंने जानकारी दी कि देश के 27 केंद्रों द्वारा 14 राज्यों के 81 जिलों में 1945 प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया।

सिंचाई के साधन कम होने से तिलहन उत्पादन प्रभावित

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय के अनुसार सिंचाई के साधन कम होने से भी तिलहन का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। किसानों में नई किस्मों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। इस अवसर पर उन्होंने तोरिया, राई और सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की 2016-17 की वार्षिक रिपोर्ट भी पेश की।

राई सरसों की कार्यशाला में तीन नई किस्मों का अनुमोदन

एग्रो रिपोर्टर | जयपुर

राई-सरसों के लिए यहां आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान वैज्ञानिकों ने गहन चिंतन मनन के बाद तीन नई किस्मों को अनुमोदित किया है। राजस्थान की जलवायु के साथ अन्य राज्यों में भी सफलता पूर्व उगाई जा सकने वाली इन किस्मों से उत्पादन और उत्पादकता दोनों में बढ़ोतरी होगी।

इस कार्यशाला के दौरान नई और उन्नत किस्मों के बारे में किसानों तक जानकारी नहीं पहुंच पाने को लेकर चिंता भी जताई गई। साथ वैज्ञानिकों से आह्वान किया गया कि खाद्य तेलों के उत्पादन में देश आत्मनिर्भर कैसे बने इसकी कार्ययोजना तैयार होनी चाहिए। इससे न सिर्फ आयात से मुक्ति मिलेगी बल्कि बाहर से आने वाले मिलावटी तेलों से भी छुटकारा मिलेगा, जिससे देश के लोगों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से संबद्ध भरतपुर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय और श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के दुर्गापुरा स्थिति राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान ने संयुक्त रूप से किया है।

इस कार्यशाला के दौरान विभिन्न केंद्रों पर विकसित सरसों बीज की तीन किस्मों का अनुमोदन किया गया। भिन्न परिस्थितियों के लिए विकसित इन किस्मों में आर.एस.-0725 राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और जम्मू के साथ दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है।

राई-सरसों पर तीन दिवसीय 24 वीं कार्यशाला कल से

देशभर के नामी डेढ़ सौ वैज्ञानिक जुटेंगे कार्यशाला में, उन्नत किस्मों और उत्पादकता बढ़ाने पर होगी चर्चा

एग्रो रिपोर्टर.जयपुर| अखिल भारतीय राई-सरसों समन्वित अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला का आयोजन 3 से 5 अगस्त तक यहां दुर्गापुरा स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान (रारी) के परिसर में किया जाएगा। भरतपुर के सरसों अनुसंधान निदेशालय की ओर से रारी के सहयोग से होने वाली इस कार्यशाला का उद्घाटन जोबनेर स्थित श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एस. राठौड़ करेंगे। इस कार्यशाला में अखिल भारतीय राई-सरसों परियोजना के अंतर्गत देश में विभिन्न केंद्रों पर कार्यरत 150 से 160 राई सरसों वैज्ञानिक भाग लेंगे। भरतपुर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने बताया कि इस कार्यशाला में सरसों के उन्नत किस्मों के बीजों पर किए गए शोध और उनके परिणामों पर चर्चा की जाएगी। इसके साथ ही आने वाले समय में किस्मों में सुधार और अधिक तेल जैसी उत्पादकता लाने के लिए क्या किया जाए, इस पर विचार होगा। उन्होंने बताया कि पिछले वर्षों में सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के नेतृत्व में अखिल भारतीय राई-सरसों समन्वित अनुसंधान परियोजना के अंतर्गत विभिन्न स्थितियों के लिए उन्नत कृषि उत्पादन और संरक्षण तकनीकों एवं उन्नत किस्मों का विकास किया गया है। इस राष्ट्रीय कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ. एम.एल. जाखड़ ने बताया कि इस कार्यशाला में तोरिया, राई और सरसों की फसल की अखिल भारतीय परियोजना की 2016-17 का वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी। इसमें प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीकी हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन और किस्मों को चिन्हित किए जाने के साथ मुख्य शोध बिंदुओं पर क्रमवार चर्चा होगी। इसमें इन फसलों में आने वाले रोग और कीटों की रोकथाम, किस्मों का विकास, गुणवत्ता सुधार और परंपरागत तकनीकी सुधार आदि पर वैज्ञानिक गहन विचार विमर्श करेंगे।

किसानों तक नई तकनीक पहुंचाने में वैज्ञानिक रूचि लें, सरकार के भरोसे न रहें : डॉ. चतुर्वेदी

राई और सरसों पर तीन दिवसीय कार्यशाला शुरू

एग्रो रिपोर्टर . जयपुर

देश में सरसों सहित अन्य तिलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नई तकनीक को अपनाने के साथ लागत कम करने पर ध्यान देना होगा। देश और विश्व में विकसित हो रही नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिकों को ही पहल करनी होगी, इसके लिए सरकारों के भरोसे न रहें। यह कहना है भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) में सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. एस.के. चतुर्वेदी का। वे गुरुवार को यहां राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर में आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि किसानों की आय को दुगुना करने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को ऐसी तकनीक का विकास करना होगा, जिसमें लागत कम आए और उत्पादन बढ़ सके।

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि सरसों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि इनके लिए जरूरी पोषक तत्वों की उपयोगिता को बढ़ाया जाए, यह वर्तमान की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इसके लिए मृदा जांच कराने के साथ उसमें वांछित पौषक तत्वों का इस्तेमाल किया जाए। वैज्ञानिकों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि उपलब्ध प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए ऐसी तकनीक का विकास होना चाहिए, जो जलवायु के अनुकूल हो और कारगर भी हो। उन्होंने नई तकनीक के विकास के लिए समन्वित पादप तकनीकों की आवश्यकता जताई। डॉ. चतुर्वेदी ने विशेष गुणों की किस्मों का विकास करने के साथ बायो टेक्नोलॉजी कार्यक्रम की प्राथमिकता को पुनः निर्धारित करने पर जोर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पी.एस. राठौड़ ने कहा कि विश्व में राई- सरसों की उत्पादकता करीब 2 टन प्रति हैक्टेयर है, उसमें जर्मनी सबसे आगे है। भारत में यह 1.83 टन प्रति हैक्टेयर ही है। इसे बढ़ाने के लिए वैज्ञानिकों को स्थानीय जलवायु के अनुकूल अधिक उत्पादन वाली किस्मों को विकसित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि राई-सरसों की उत्पादकता को मुख्य रूप से अनिश्चित वर्षा, पाला, उच्च तापमान, कीट और रोग प्रभावित करते हैं। इनसे बचाव के लिए समुचित रणनीति बनाई जानी चाहिए। डॉ. राठौड़ ने देश में खाद्य तेलों की जरूरत, उत्पादन और आयात को लेकर भी स्थिति की विवेचना की। श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक (अनुसंधान) डॉ. वी.के. यादव, राजस्थान कृषि अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. एस.जे. सिंह ने अनुसंधान उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए विकास के सुझाव दिए। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने राई-सरसों अनुसंधान को लेकर गत वर्ष की उपलब्धियों की जानकारी दी। कार्यशाला के समन्वयक डॉ. एम.एल. जाखड़ ने आगंतुकों का धन्यवाद देते हुए सरसों के विकास के लिए कार्य करने का विश्वास दिलाया।

किसानों तक नई तकनीक पहुंचाने में वैज्ञानिक रुचि लें : डॉ. चतुर्वेदी

राई और सरसों पर तीन दिवसीय कार्यशाला शुरू

एग्रो रिपोर्टर | जयपुर

देश में सरसों सहित अन्य तिलहन के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नई तकनीक को अपनाने के साथ लागत कम करने पर ध्यान देना होगा। देश और विश्व में विकसित हो रही नई तकनीक को किसानों तक पहुंचाने के लिए वैज्ञानिकों को ही पहल करनी होगी, इसके लिए सरकारों के भरोसे न रहें। यह कहना है भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) में सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. एस.के. चतुर्वेदी का। वे गुरुवार को राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर में अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि किसानों की आय को दुगुना करने के प्रधानमंत्री के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कृषि वैज्ञानिकों को ऐसी तकनीक का विकास करना होगा, जिसमें लागत कम आए और उत्पादन बढ़ सके।

डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि सरसों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि इनके लिए जरूरी पोषक तत्वों की उपयोगिता को बढ़ाया जाए, यह वर्तमान की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इसके लिए मृदा जांच कराने के साथ उसमें वांछित पोषक तत्वों का इस्तेमाल किया जाए। वैज्ञानिकों का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि उपलब्ध प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए ऐसी तकनीक का विकास होना चाहिए, जो जलवायु के अनुकूल हो और कारगर भी हो।

राई सरसों की कार्यशाला में तीन नई किस्मों का अनुमोदन

कार्यशाला किसानों में नई किस्मों के प्रति जागरूकता में कमी पर चिंता जताई

एग्रो रिपोर्टर | जयपुर

राई-सरसों के लिए यहां आयोजित तीन दिवसीय कार्यशाला के दौरान वैज्ञानिकों ने गहन चिंतन मनन के बाद तीन नई किस्मों को अनुमोदित किया है। राजस्थान की जलवायु के साथ अन्य राज्यों में भी सफलता पूर्व उगाई जा सकने वाली इन किस्मों से उत्पादन और उत्पादकता दोनों में बढ़ोतरी होगी।

इस कार्यशाला के दौरान नई और उन्नत 'किस्मों के बारे में किसानों तक जानकारी नहीं पहुंच पाने को लेकर चिंता भी जताई गई। साथ वैज्ञानिकों से आह्वान किया गया कि खाद्य तेलों के उत्पादन में देश आत्मनिर्भर कैसे बने इसकी कार्ययोजना तैयार होनी चाहिए। इससे न सिर्फ आयात से मुक्ति मिलेगी बल्कि बाहर से आने वाले मिलावटी तेलों से भी छुटकारा मिलेगा, जिससे देश के लोगों का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कार्यशाला का आयोजन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से संबद्ध भरतपुर स्थित सरसों अनुसंधान निदेशालय और श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के दुर्गापुरा स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान ने संयुक्त रूप से किया है।

इस कार्यशाला के दौरान विभिन्न केंद्रों पर विकसित सरसों बीज की तीन किस्मों का अनुमोदन किया गया। भिन्न परिस्थितियों के लिए विकसित इन किस्मों में आर.एस.-0725 राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और जम्मू के साथ दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है। इसी प्रकार लवणीय क्षेत्रों के लिए सीएस-2800-1-2-3-5-1 किस्म को अनुमोदित किया गया है। वहीं, गुणवत्ता किस्मों में पी.डी.जेड.-1 किस्म को चिन्हित किया गया है। कार्यशाला के समापन पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं का विस्तार और अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन को बढ़ाया जा सकता है। किसानों तक अच्छी किस्म के बीजों की जानकारी और उपलब्धता दोनों की पहुंच जरूरी है। इसी क्रम में इस साल प्रजनक बीज अधिक उत्पादन किया गया है। उन्होंने जानकारी दी कि देश के 27 केंद्रों द्वारा 14 राज्यों के 81 जिलों में 1945 प्रथम पंक्ति प्रदर्शनों का आयोजन किया गया, जिससे किसानों को नई किस्मों और प्रदर्शनों से रूबरू कराया गया। कार्यशाला में राई-सरसों में बीमारियों, बीमारी की रोकथाम, राई में संकर किस्मों का उत्पादन, गुणवत्ता सुधार और परंपरागत तकनीकी सुधार के विषयों पर पेपर वाचन व अन्य तरीकों के चर्चा की गई।

सिंचाई के साधन कम होने से तिलहन उत्पादन प्रभावित

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय के अनुसार सिंचाई के साधन कम होने से भी तिलहन का उत्पादन प्रभावित हो रहा है। किसानों में नई किस्मों के प्रति जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। इस अवसर पर उन्होंने तोरिया, राई और सरसों फसल की अखिल भारतीय परियोजना की 2016-17 की वार्षिक रिपोर्ट भी पेश की।

चांदी 800 रुपए टूटी, सोना भी 150 रु. नरम

जयपुर। वैश्विक स्तर पर सोने-चांदी में सप्ताहांत पर आई तेज गिरावट और औद्योगिक मांग कमजोर पड़ने से शनिवार को स्थानीय सर्राफा बाजार में सोना 150 रुपए और चांदी 800 रुपए टूट गई। जेवराती सोने के भाव भी 100 रुपए प्रति दस ग्राम घट गए।

विदेशी बाजारों में इस सप्ताहांत शुक्रवार को चांदी हाजिर 0.24 डॉलर लुढ़ककर 16.24 डॉलर प्रति औंस पर आ गई। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चांदी में आई इस तेज गिरावट के कारण घरेलू बाजार में भी इसके भाव काफी टूट गए। विश्लेषकों का कहना है कि स्थानीय बाजार में चांदी के दो सप्ताह से अधिक के निचले स्तर तक आने से अगले सप्ताह कम भाव पर इसकी लिवाली बढ़ सकती है। इसी बीच सोना हाजिर भी 11 डॉलर फिसलकर 1,258.85 डॉलर प्रति औंस पर आ गया।

जयपुर सर्राफा बाजार भाव : चांदी (999) 38,400, चांदी रिफ्राइनरी 37,900 रुपए प्रति किलो। चांदी कलदार 68,000 रुपए प्रति सैकड़ा। सोना स्टैंडर्ड 29,250 रुपए, सोना जेवराती 27,800 रुपए तथा वापसी 26,900 रुपए प्रति दस ग्राम।

हलधर टाइम्स
जयपुर
वर्ष-12, अंक-40, 7 अगस्त - 13 अगस्त, 2017
3

कार्यशाला

राई-सरसों पर 24वीं राष्ट्रीय कार्यशाला सम्पन्न

किसानों को मिलेगी 3 नई सरसों किस्म

जयपुर (कास)। प्रदेश के किसानों को सरसों की तीन नई किस्म उपलब्ध होगी। राई-सरसों पर आयोजित कृषि वैज्ञानिकों की कार्यशाला में सरसों की नई किस्मों का अनुमोदन किया गया। गौरतलब है कि राई-सरसों पर राजस्थान कृषि अनुसंधान केन्द्र, दुर्गापुरा के सहयोग से सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला आयोजित की गई थी। वैज्ञानिकों द्वारा अनुमोदित किस्म में आर एच-0725, सीएस- 2800-1-2-3-5-1 और पीडीजेड -1 शामिल है। नई सरसों किस्म का विकास क्रमशः हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लधियाना के वैज्ञानिकों ने किया है। इन किस्मों को प्रदेश के साथ-साथ हरियाणा, पंजाब और जम्मू-काश्मीर राज्य के सिंचित, अर्द्धसिंचित और लवणीय क्षेत्र के लिए चिन्हित किया गया है। श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर के कुलपति डॉ. पीएस राठौड़ समापन समारोह के मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने कहा कि विश्व में राई- सरसों की उत्पादकता करीब 2 टन प्रति हैक्टेयर है, उसमें

जर्मनी सबसे आगे है। भारत में यह 1.83 टन प्रति हैक्टेयर ही है। वर्ष 2015 में 14 मिलयन टन खाद्य तेल का आयात किया गया। खाद्य तेल में आत्मनिर्भर बनने के लिए तिलहनी फसल की प्रति यूनिट उत्पादन बढ़ाने की जरूरत है। वर्ष 1950 में जहां नत्रजन की कमी मृदा में थी। लेकिन, वर्तमान में सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी भी राई-सरसों की उत्पादकता को प्रभावित कर रही है। राई-सरसों की उत्पादकता को मुख्य रूप से अनिश्चित वर्षा, पाला, उच्च तापमान, कीट और रोग प्रभावित करते हैं। इनसे बचाव के लिए समुचित रणनीति बनाई जानी चाहिए। इससे पूर्व सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पीके राय ने तोरिया, राई- सरसों अखिल भारतीय परियोजना कि 2016-17 की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि खाद्य तेल की मांग और आपूर्ति की खाई को पाटने के लिए देश के कृषि अनुसंधान केन्द्रों पर तोरिया, पीली सरसों, गोभी सरसों, राई, और तारामीरा की किस्मों के विकास का कार्य किया जा रहा हैं। गौरतलब है कि कार्यशाला के शुभारंभ सत्र में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (तिलहन) डॉ. एसके चतुर्वेदी ने अपने विचार रखे थे।

इन पर हुई चर्चा : कार्यशाला में राई-सरसों वैज्ञानिको ने विभिन्न राज्यों के लिए जलवायु, भूमि, संसाधन की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए प्रजनक बीज उत्पादन, तकनीक हस्तांतरण, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, किस्म विकास, रोग-कीट प्रबंधन, गुणवत्ता सुधार और परम्परागत तकनीकी सुधार विषयों पर विचार व्यक्त किये।

आवश्यकता से अधिक तेल उपयोग बिगाड़ रहा सेहत

विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानकों से दोगुना करते हैं इस्तेमाल

डेली न्यूज, जयपुर। भारत में खाद्य तेल का उपयोग जरूरत से ज्यादा किया जा रहा है। तेल का सबसे ज्यादा उपभोग मध्यम वर्ग में किया जा रहा है। देश में विश्व स्थास्थ्य संगठन के मानकों से करीब दोगुना खाद्य तेल इस्तेमाल किया रहा है। इस कारण जहां तेल की मांग को पूरा करने के लिए एक ओर विदेशों से करीब 69 हजार करोड़ रुपए का तेल आयात करना पड़ रहा है, साथ ही जरूरत से अधिक इस्तेमाल से उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

दुर्गापुरा कृषि अनुसंधान संस्थान में आयोजित कार्यशाला में प्रतिभागी।

यह कहना है नई दिल्ली स्थित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक निदेशक डॉ. एस.के. चतुर्वेदी का। वे बुधवार को दुर्गापुरा स्थित कृषि अनुसंधान संस्थान में राई सरसों अनुसंधान निदेशालय की ओर से आयोजित अखिल भारतीय राई सरसों अनुसंधान की 24वीं वार्षिक कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। कार्यशाला में देशभर से करीब सवा सौ कृषि वैज्ञानिक हिस्सा ले रहे हैं। इस अवसर पर चतुर्वेदी ने बताया कि डब्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार एक व्यक्ति के लिए प्रति वर्ष 9 से 10 किलो खाद्य तेल का उपयोग पर्याप्त है, लेकिन भारत में इसका दोगुना करीब 18 किलो तक तेल का उपयोग किया जा रहा है। इस कारण भी स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ रहा है।

कृषि वैज्ञानिकों ने रखे विचार

कार्यशाला में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पुसा नई दिल्ली एवं बनारस कृषि विश्वविद्यालय के राई-सरसों अनुसंधान केन्द्रों को उल्कृष्ट केन्द्र का अवार्ड देकर सम्मानित भी किया गया। इससे पूर्व कार्यशाला का उद्घाटन श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विवि. जोबनेर के कुलपति डॉ. पी.एस. राठौड़ ने किया। विवि के अनुसंधान निदेशक डॉ. वी.के. यादव, राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. एस.जे. सिंह, सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ.पी.के.राय, समन्वयक डॉ. एम.एल. जाखड़ समेत अन्य कृषि वैज्ञानिकों ने विचार रखे।

समाचार जगत

निर्देशन समिति की बैठक

मुख्यमन्त्री जल स्वावलंबन अभियान में 50 लाख पौधारोपण

जयपुर (कासं)। मुख्यमन्त्री जल स्वावलम्बन अभियान के दूसरे चरण में प्रदेश के सभी 295 खण्डों में अब तक 50 लाख पौधे लगाये जा चुके है तथा शेष 10 लाख पौधे 30 अगस्त तक लगा दिए जाएंगे। राजस्थान नदी बेसिन एवं जल संसाधन योजना प्राधिकरण के अध्यक्ष श्रीराम वेदिरे की अध्यक्षता में आयोजित निर्देशन समिति की बैठक में बताया गया कि नौ सौ से अधिक पुष्पकुंजों में पौधारोपण किया गया। वेदिरे ने बताया कि सभी पौधों का जीओ-टैग किया गया है जिसको वन विभाग 5 वर्ष तक देखरेख भी करेगा। बैठक में अतिरिक्त मुख्य सचिव वन एन.सी. गोयल, प्रमुख शासन सचिव कृषि नीलकमल दरबारी, प्रमुख शासन सचिव जल संसाधन शिखर अग्रवाल, शासन सचिव पंचायतीराज नवीन महाजन, शासन सचिव ग्रामीण विकास रोहित कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक एस. गोयल, आयुक्त कृषि विकास सीताराम भाले, आयुक्त नदी बेसिन प्राधिकरण एस.एस. काला, आयुक्त जल ग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण अनुराग भारद्वाज सहित सम्बन्धित विभागों के नोडल अधिकारी मौजूद रहे।

'किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए खेती की लागत को कम करना होगा'

जयपुर (कासं)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. एस के चतुर्वेदी ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए खेती की लागत को कम करना वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए। तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए राई सरसों का विकास एवं क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों एवं किसानों का लक्ष्य होना चाहिए। डॉ. एस के चतुर्वेदी सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर की ओर से राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा में आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा कई किस्मों का विकास किया गया है लेकिन किसानों के खेतों पर उनकी उत्पादकता में काफी अनिश्चितता पाई जाती है। इसलिए विभिन्न परिस्थितियों में किस्मों की टिकाऊ उत्पादकता को बढ़ाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर जयपुर के कुलपति डॉ. पी एस राठौड़ ने कहा कि विश्व में राई-सरसों की उत्पादकता करीब 2 टन प्रति हैक्टेयर है। जबकि भारत में यह 1.83 टन प्रति हैक्टेयर है। इसलिए वैज्ञानिकों को विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल अधिक उत्पादन वाली किस्मों एवं तकनीकों का विकास करना चाहिए।

आजादी के 70 साल के उपलक्ष्य में प्रचार-प्रसार

चमत्कार चाहिए

मदनगंज-किशनगढ़ (निसं)। मुनिश्री सुधासागर जी महाराज ने गुरुवार को आर.के कम्युनिटी सेंटर में धर्मोपदेश देते हुए कहा कि भारतीय नारी धन, दौलत, वैभव से नहीं धर्म, सज्जनता, सरलता से प्रभावित होती है। कष्टों में धर्म को नहीं छोड़ने वाली भारतीय नारी है। दुनिया झूठी हो सकती है लेकिन भगवान नहीं। गुरु जो कहता है वही प्रमाणित है। जो परीक्षा को सरल बनाना चाहते है समझो उसमें कोई कमजोरी है।

मुनिश्री ने संदेशक की महिमा का गुणगान करते हुए कहा कि संकट में धर्म को नहीं छोड़ने वाला सफल होता है। शुद्ध भाव होने पर ही संदेशक का चमत्कार होता है। देश में 99 प्रतिशत लोगों की धर्म से आस्था संकट बढ़ने पर कम हो जाती है लेकिन 1 प्रतिशत लोगों की आस्था धर्म में बढ़ जाती है। सम्यक दृष्टि की श्रद्धा बढ़ती जाती है। वर्तमान में मनुष्य धर्म बंद करने के बहाने ढूंढ रहा है, लेकिन कर्म करने के नहीं। मुनिश्री ने कहा कि मंथन करने की आवश्यकता है। देव दर्शन नहीं करना जीवन का सबसे अशुभ दिन होता है। स्वयं का पुण्य दूसरे के काम नहीं आता। जो संकट में धर्म को नहीं छोड़ता उसके जीवन में चमत्कार होते है। जिसको चाहते हो उससे कभी शिकायत नहीं करनी चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि आप सोचते होंगे की धर्मात्माओं पर उपसर्ग क्यों आते है। इस पर मुनिश्री ने भगवान राम व रावण का उदाहरण देते हुए समझाया कि प्रकृति हमेशा सज्जन आत्मा के साथ दुर्जन को जोड़ती है ताकि उसका पाप का घड़ा

तुरन्त भर पापकर्म की व्यक्ति को गा भोगा और पु का घड़ा ज सज्जन व्यक्ति

जूट के थैले में सामान लाने में शर्म कैसी

जयपुर (कासं)। कई सालों पहले जब भारत के लोग बाजार सामान लेने जाते थे तो कपड़े या जूट

से बना थैला अपने साथ ले जाते थे। यह भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा बन चुका था। लेकिन जैसे-जैसे तकनीकी युग बढ़ा, कपड़े की जगह प्लास्टिक बैग्स ने ले ली। हालात यह हो गई की उसके बिना काम ही नहीं चलने वाली स्थिति पैदा हो गई। इसके चलते लोगों ने प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले पर्यावरण के खतरे के बारे में सोचा तो सही, लेकिन अमल में नहीं लाए। सरकार की ढुलमुल नीतियों ने इस बारे में कोई कड़ा कदम नहीं उठाया। बाद में परिस्थितियां जैसे-जैसे गंभीर होती दिखी तो सरकार ने प्लास्टिक के उपयोग पर कड़ाई बरतनी शुरू की। ऐसी ही बातों को शहर की कलाकार अंजु दवे ने लोगों को प्लास्टिक से होने वाली हानि के बारे में अपने व्यंग्य चित्रों के माध्यम से जागरूक करने की सफल कोशिश की है। उनके साथ ईरान से आई चित्रकार रोया डिलखोश ने प्रकृति के सौंदर्य को अपनी पेंटिंग्स में उतार कर संदेश दिया है कि नेचर को हराभरा रखने से ही पर्यावरण का संतुलन कायम रहता है, जो कि हमारे स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक है। इन दोनों कलाकारों ने गुरुवार को इन्हीं विषयों को लेकर मालवीय नगर स्थित कॉफीबीन कैफे स्थित आर्ट गैलेरी में एक वर्कशॉप सजोई। रंगों कणों और संदेशात्मक कार्टून्स के माध्यम से इन कलाकारों ने प्लास्टिक के खतरे और एनवायरमेंट के सौंदर्य बिम्बों में अपनी कलात्मक सोच उकेरी है। कार्यशाला में कलाकारों ने शहर के विभिन्न डिजाइन्स एकेडमी, इंजीनियरिंग कॉलेज के स्टूडेंट्स के साथ जूट-कलाथ के बैग्स पर तरह-तरह के फूल-पत्तियों के रंग-बिरंगे चित्रों का प्राकृतिक रंगों से कैनवास सा सजाया है। अंजु ने प्लास्टिक के बंद करने पर आपत्ति करने वाले लोगों पर अपने कार्टून्स के जरिए सटीक तंज कसे है। साथ ही दोनों ही आर्टिस्ट्स ने ब्रिंग युअर ओन बैग की अवधारणा को भी रेखांकित कर संदेश दिया है कि जूट के थैले में बाजार से सामान लाने में शर्म कैसी।

गुलाबी

जगत

...ग 30 फीस...

आयात 50 फीसदी से अधिक बढ़...

...बढ़ोतरी को मापने हुए ...बढ़ा दिया है। इसी कारण ...भारत में सोने के आयात ...तेजी दर्ज की गई है। ...मामले में पूरी दुनिया में ...वाले भारत में जीएसटी ...सोने पर कर की दर 1.2... तीन प्रतिशत की गई है।

भारत में प्रतिवर्ष ... सोमसुंदरम पी.आर. ने ... बढ़ोतरी की संभावना ... आयात और पुराने ... छमाही में पूरे साल ... वाले कुछ सालों ...

1,262.15 ... 1.40 डॉलर ... 29,350 ... 68,000

ईटीएफ में निवेश से मिलेंगे ...

जयपुर। वित्तीय मार्केट इंडाइसेस की सबसे बड़े प्रदाता एशिया इंडेक्स के सीनियर मैनेजर (प्रोडक्ट मैनेजमेंट) महावीर कासवा ने बताया कि शेयर बाजार में निवेश करने के लिए सबसे बेहतर लो कॉस्ट प्रोडक्ट एक्सचेंज-ट्रेडेड फंड्स (ईटीएफ) है। ईटीएफ में पिछले कुछ महिनों में जबरदस्त निवेश हुआ और आंकड़ा 40,000 करोड़ रुपए सालाना पहुंच गया है। कंपनी के वर्तमान में 54 इंडेक्स निवेश के लिए उपलब्ध है, जिनमें से 12 फिक्सड इनकम इंडेक्स है। वर्तमान में शेयर बाजार में आई तेजी से निवेश... ज्यादा रिटर्न प्रा... इंडेक्स मैनेज... कि ईटीएफ में... यह तुलनात्म... के साथ अ... से मिलते जु... योजनाओं... पोर्टफोलियो... इसके अ... पोर्टफोलि... में काम है...

...पुर भ्रमण

...विकास निगम की पार्टनर ...सेस आमेर, जयगढ़ और ...। संख्या गत 18 सालों ...शिल है।

टैली सॉल्यूशंस ने जीए... स्टडी का संचा...

नई दिल्ली। प्रमुख भारतीय एंटरप्राइ... प्राइवेट लिमिटेड ने भारत में एसएमई... स्ट्रेट के साथ मिलकर आज जीएस... बीच किए गए एक अध्ययन के... गए इस अध्ययन में 750 ... परिणाम बताते है कि, इंडि... करने के लिए एक उचित ... गोयनका ने कहा कि सर्वेक्षण ने निष्कर्ष... जिनका समाधान करने की आवश्यकता... ही कुछ समाधान प्रदान किए हैं। ... जागरूकता कमी अब समाधान एक ... टैली सॉल्यूशंस तीन दशकों से भी ज्यादा ... पहले उत्पादों की तरह इस्तेमाल ...

बीएमसीएचआरसी के डॉक्टरों ने अं...

...में नई तकनीक का किया प्र...

कैंसर ग्रस्त महिला के गाल, आहार नली और जबड़े का ए...

पिंडली में एक ही जगह से हड्डी, त्वचा और मांसपेशी लेकर किया

अस्पताल के प्लास्टिक ... रिकंस्ट्रक्टिव सर्जरी विभाग ... असिस्टेंट कंसल्टेंट डॉ. ...

...एनबी का रेलिगेयर के ...

...ज रेलिगेयर हेल्थ इंश्योरेंस ने ...ल बैंक के साथ बैंकएश्योरेंस ...की घोषणा की है। बैंक ...लगभग 7000 शाखाओं के ...से विस्तृत नेटवर्क के माध्यम ...

प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, ... ने कहा कि हम इन ... की अपने 100 मिलियन से ... ग्राहकों को ... उनकी को सीमित ... स्वरूप के तौर पर ...

सीताराम भाल, आयुक्त नदी बेसिन प्राधिकरण एम.एस. काला, आयुक्त जल ग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण अनुराग भारद्वाज सहित सम्बन्धित विभागों के नोडल अधिकारी मौजूद रहे।

'किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए खेती की लागत को कम करना होगा'

जयपुर (कासं)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के सहायक महानिदेशक (दलहन एव तिलहन) डॉ. एस के चतुर्वेदी ने कहा कि किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए खेती की लागत को कम करना वैज्ञानिकों का उद्देश्य होना चाहिए। तिलहनी फसलों का उत्पादन बढ़ाना सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए राई सरसों का विकास एवं क्षेत्रफल तथा उत्पादन बढ़ाना वैज्ञानिकों एवं किसानों का लक्ष्य होना चाहिए। डॉ. एस के चतुर्वेदी सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर की ओर से राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा में आयोजित अखिल भारतीय राई-सरसों अनुसंधान परियोजना की 24 वीं कार्यशाला को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा कई किस्मों का विकास किया गया है लेकिन किसानों के खेतों पर उनकी उत्पादकता में काफी अनिश्चितता पाई जाती है। इसलिए विभिन्न परिस्थितियों में किस्मों की टिकाउ उत्पादकता को बढ़ाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर जयपुर के कुलपति डॉ. पी एस राठौड़ ने कहा कि विश्व में राई-सरसों की उत्पादकता करीब 2 टन प्रति हैक्टेयर है। जबकि भारत में यह 1.83 टन प्रति हैक्टेयर है। इसलिए वैज्ञानिकों को विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल अधिक उत्पादन वाली किस्मों एवं तकनीको का विकास करना चाहिए।

आजादी के 70 साल के उपलक्ष्य में प्रचार-प्रसार

जूट के थैले ...

जयपुर (कासं)। कई सालों पहले जब भारत के लोग बाजार सामान लेने जाते थे तो कपड़े या जूट

से बना थैला अपने साथ ले जाते थे। यह भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा बन चुका था। लेकिन जैसे-जैसे तकनीकी युग बढ़ा, कपड़े की जगह प्लास्टिक बैग्स ने ले ली। हालत यह हो गई की उसके बिना काम ही नहीं चलने वाली स्थिति पैदा हो गई। इसके चलते लोगों ने प्लास्टिक के उपयोग से होने वाले पर्यावरण के खतरे के बारे में सोचा तो सही, लेकिन अमल में नहीं लाए। सरकार की ढुलमुल नीतियों ने इस बारे में कोई कड़ा कदम नहीं उठाया। बाद में परिस्थितियां जैसे-जैसे गंभीर होती दिखी तो सरकार ने प्लास्टिक के उपयोग पर कड़ाई बरतनी शुरू की। ऐसी ही बातों को शहर की कलाकार अंजु दवे ने लोगों को प्लास्टिक से होने

बीएमसीएचआरसी ...

में नई तकन...

कैंसर ग्रस्त महिला के गाल,

पिंडली में एक ही जगह से हड्डी, त्वचा और मांसपेशी लेकर किया

नई किस्म से लवणीय भूमि में बढ़ेगी सरसों की पैदावार

सरसों की तीन नई किस्म तैयार

डेली न्यूज

जयपुर ▷ 5 अगस्त

कृषि वैज्ञानिकों ने सरसों की तीन नई किस्मों को व्यावसायिक उत्पादन के लिए चिह्नित करते हुए इन्हें हरी झंडी दे दी है। नई किस्मों से देश के लवणीय इलाकों में सरसों का अधिक उत्पादन होने के साथ ही गुणवत्तायुक्त सरसों की पैदावार में बढ़ोतरी संभव हो सकेगी। देशभर में करीब 7 लाख मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र लवणीय और खारीय है। ऐसे में नई किस्म के जरिए सरसों का 15 से 20 फीसदी तक अधिक उत्पादन किया जा सकेगा। इन नई किस्मों को दुर्गापुरा स्थित राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान में चल रही तीन दिवसीय वार्षिक कार्यशाला के समापन अवसर पर कृषि वैज्ञानिकों ने चिह्नित किया है।

सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. पी.के. राय ने बताया कि उत्तरी राजस्थान, हरियाणा, पंजाब एवं जम्मू में समय से असिंचित क्षेत्रों में बुआई के लिए आरएच 0725 तथा लवणीय परिस्थितियों के लिए सीएस 2800-1-2-3-5-1 एवं गुणवत्ता किस्मों के अन्तर्गत पीडीजेड -1 को चिह्नित किया गया है। कार्यशाला में वैज्ञानिकों एकमत होकर कहा कि फसल सुधार, सही प्रबंधन, सिंचाई सुविधाओं एवं अच्छे समर्थन मूल्यों से ही देश में तिलहन उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है। आर्थिक सुदृढ़ता के लिए किसानों को राई-सरसों की खेती को बढ़ावा देने की जरूरत है।